

भक्तिकाल

वाणी और विचार



सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव
अवधेश कुमार

भक्तिकाल

वाणी और विचार

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

अवधेश कुमार

विजया बुक्स

प्रकाशक

विजया बुक्स

1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

फोन : 9910189445

Email : vijyabooks@gmail.com

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-93-81480-87-8

मूल्य : 695/-

मुद्रक

विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

अनुक्रम

□ प्रस्तावना

□ भूमिका

1. भक्तिकाव्य का रचना-संसार प्रो. वीरेन्द्र मोहन 15
2. इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारिए
प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी 19
3. कबीर का समाज दर्शन प्रो. चन्दा बैन 33
4. 'रामचरितमानस' की वर्तमान सांस्कृतिक भूमिका डॉ. पंकज चतुर्वेदी 39
5. भक्ति साहित्य का समाज दर्शन डॉ. राजेन्द्र यादव 57
6. कबीर का समन्वयवाद डॉ. आशुतोष 66
7. कबीर की प्रासंगिकता का प्रश्न डॉ. हिमांशु कुमार 71
8. संत रविदास की भक्ति में बेगमपुर की अभिव्यक्ति
डॉ. अरविन्द कुमार 76
9. भक्तिकाल : मीराबाई और स्त्री संघर्ष डॉ. मनीष कुमार 82
10. मीराबाई : जीवन और भक्ति सन्दर्भ डॉ. छबिल कुमार मेहेर 90
11. भ्रातृत्व के आदर्श : राम और भरत डॉ. सरोज गुप्ता 97
12. रामकथा का कालजयी ग्रन्थ 'श्रीरामचरितमानस' डॉ. घनश्याम भारती 102
13. सूरदास और उनके काव्य में भक्ति की लहरें! अवधेश कुमार 106
14. कबीर : सामाजिक समरसता के क्रांतिकारी संत
डॉ. संजीव कुमार विश्वकर्मा 119

इन मुसलमान हरिजनन पर कोटिन हिन्दुन वारिण

प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी

भक्तिकाल भारतीय समाज की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना के अग्रदूत का काल था। इस युग की काव्य-चेतना की पृष्ठभूमि में यवन-संस्कृति के पदार्पण और उसके कारण उत्पन्न सांस्कृतिक संकट का बहुत बड़ा योगदान रहा है। वस्तुतः संपूर्ण भक्तिकाल जर्जर जीवन-मूल्यों के पतन और स्वस्थ जीवन-मानों के विकास की रोमांचकारी गाथा है। इससे पूर्व दसवीं शताब्दी तक आते-आते भारतीय मेधा जड़ना और अंध विश्वासों से ग्रस्त हो गयी थी। बहिर्जगत आत्यंतिक-सुख और सत्य का आधार बन गया था। ऐसे ही समय में यवनों का पदार्पण हुआ। नये यथार्थ की चोट से भारतीय जनमानस का विचलित होना स्वाभाविक था। सच यह है कि संपूर्ण-बहिर्जगत आंदोलित हुआ और सत्य और सुख का वस्तुगत आधार खंडित हो गया। इस विषम परिस्थिति में कबीर जैसे जननायक का आविर्भाव हुआ। उन्होंने अन्तर्जगत के सत्य का आख्यान किया और घट के भीतर ब्रह्माण्ड की स्थिति बताते हुए मन के मथुरा, दिल के द्वारिका और काया के काशी में परम सत्य का अनुसंधान करने की बात कही। कुतुबन, मंझन, जायसी आदि सूफी कवियों ने 'प्रेम की पीर' लेकर हिन्दू-मुस्लिम समन्वय का मार्ग प्रशस्त किया है। कबीर के पूर्व अमीर खुसरो ने सांस्कृतिक समन्वय की जो ज्योति जलायी वह भक्तिकाल में पूरी तरह से जगमगाने लगी थी। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही संप्रदायों के संत कवियों ने भक्ति के रास्ते चलकर सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय की जिस चेतना का विकास किया उससे तत्कालीन जर्जर-हताश-निराश भारतीय समाज को आस्था, विश्वास और प्रेम का संबल मिला। हिन्दू-मुस्लिम समाज के बीच परस्पर प्रेम-सद्भाव का सूत्र सुदृढ़ हुआ।

भारत में सांस्कृतिक समन्वय की चेतना का अंकुरण भक्तिकाल के पूर्व हो चुका था। अब्दुल रहमान, अमीर खुसरो प्रभृति मुस्लिम कवियों ने भाषा और साहित्य-सृजन के स्तर पर समन्वय-भावना का बीजवपन किया। वास्तव में भारतीय विषयों के प्रति मुस्लिम रचनाकारों की अभिरुचि बहुत पहले से उत्पन्न हो चुकी थी।

12वीं शताब्दी में अब्दुल रहमान कृत 'संदेशरासक' इसका प्रमाण है। फारसी साहित्य में भारतीय विषयों का समावेश करने वालों में अमीर खुसरो और फैज़ी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। खुसरो के काल तक मुसलमानों में भारतीयता का भाव उदय हो गया था। खुसरो के लिए 'तूती-ए-हिन्द' की उपाधि इस बात का परिचायक है। अब्दुल कुद्दूस गंगोही (मृ. 1537) ने हिन्दी मुक्तकों की शैली को काव्य-रचना का आधार बनाया। फारसी साहित्य के अनुकरण से मसनवी शैली भी हिन्दी में लोकप्रिय हुई। अपनी प्रवृत्तियों और परंपराओं के कारण फारसी साहित्य भारतीयों को अरबी साहित्य से अधिक अनुकूल लगा और उससे वे बेहद प्रभावित हुए।

सांस्कृतिक समन्वय-चेतना का विकास काव्य-भाषा के स्तर पर हिन्दी या हिन्दवी और लोकभाषा अवधी के द्वारा संभव हुआ। सामाजिक रीति-रिवाज, भाषा और साहित्य आदि से जुड़े हुए प्रश्नों पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान द्वारा दोनों पक्ष लाभान्वित हुए। शेखहमीदुद्दीन सूफी (मृ. 1279ई.) के परिवार में हिन्दी का प्रयोग बातचीत की भाषा के रूप में होता है। मौलाना जमालुद्दीन (मृ. 1265ई. पूर्व) की धर्म गोष्ठियों में हिन्दी गीत गाये जाते थे। शेख फरीदुद्दीन शकरगंज की फारसी कविता में हिन्दी का सम्मिश्रण है। अमीर खुसरो ने बोलचाल की हिन्दी भाषा में काव्य-रचना की। आदिकाल में खड़ी बोली को काव्य की भाषा बनाने वाले वे पहले कवि हैं। खुसरो दिल्ली तथा उसके आस-पास की अपनी समकालीन लोकभाषा को 'हिन्दवी' और 'हिन्दी' संज्ञाये देते हैं। 'खालिकबारी' में 33 बार हिंदवी और 12 बार हिन्दी शब्द प्रयुक्त हुये हैं। खुसरो की हिन्दी रचनाओं का एक संकलन 'जवाहरे खुसरबी' है। 'खालिकबारी' के द्वारा वे हिन्दू-मुसलमान दोनों के बीच की भाषा संबंधी कठिनाइयों को दूर करने का प्रयास करते हैं। खुसरो से बहुत पहले मसूद-ए-साद बिन सलमा हिन्दवी में रचना कर चुके थे।

'हिन्दी' के प्रति मुसलमानों का यह मोह किसी बाह्य दबाव अथवा निहित स्वार्थ के कारण नहीं था, बल्कि वे इसके गुणों के कारण आकर्षित थे। किसी ने प्रसिद्ध सूफी संत सैयद मुहम्मद गेसूदराज (मृ. 1422ई.) से सूफियों द्वारा फारसी के स्थान पर हिन्दी का महत्त्व देने का कारण पूछा तो उन्होंने उत्तर दिया कि "हिन्दी अधिक सुगमता से हृदयों को द्रवित कर देती है, इसमें सौष्ठव अधिक है। इसके माध्यम से भावभिव्यक्ति भी अधिक स्पष्टता से हो सकती है। इसमें लय और स्वर का सुंदर समावेश है, यह नेत्रों को अश्रुसिक्त कर सकती है तथा मन में अधीनता, विनय और विनम्रता जैसे भावों को लाती है।" मुल्ला दाउद का नाम ऐसे ही मुसलमानों में लिया जाता है जिन्हें हिन्दी से स्वाभाविक प्रेम था। इसीलिए उन्होंने तुर्की भाषा में लिखने के साथ हिन्दी में रचना की। इसे तत्कालीन मुसलमानों द्वारा सांस्कृतिक क्षेत्र में हिन्दुओं के निकट आने का उपक्रम माना जा सकता है।

भक्ति के सभी मार्गों में वास्तविक रूप से ईश्वर अनुपस्थित ही रहा है, इसीलिए सगुण भक्ति के तमाम अवतारवादी प्रतीकों के माध्यम से भक्ति साहित्य का अंतिम लक्ष्य अपने समय के मनुष्य की प्रवृत्तियों में बदलाव करना, उसे बेहतर मनुष्य बनाने की कोशिश करना। निर्गुण भक्ति भी इस अर्थ में सगुण है और अपने रूप-गुण-विधान से भरी सगुण भक्ति के दोनों आयाम राम और कृष्ण संबन्धी भक्ति धाराएँ अंततः निर्गुण ही हैं, क्योंकि वास्तविक ईश्वर सगुण और निर्गुण दोनों जगह अनुपस्थित है। इस अर्थ में भक्तिकालीन साहित्य की सभी धाराओं का प्रथम और अंतिम लक्ष्य मनुष्य ही है, इसीलिए भक्ति अपने पूर्ण स्वरूप में एक जन-आंदोलन ही था।

- इसी पुस्तक से



विजया बुक्स
दिल्ली 110032

ISBN : 978-93-81480-87-8



9 789381 480878